7

संभावना और अवसर

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में हमने लोक और आदिवासी कला के महत्व को जाना। इस पाठ में हम इस क्षेत्र की संभावनाओं और अवसरों को जानेंगे। लोककला विषय का अध्ययन करने वाले शिक्षार्थियो एवं उनके अभिभावकों के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि इस विषय के पढ़ने के उपरांत छात्रों के लिए भविष्य में क्या संभावनाएँ एवं अवसर उपलब्ध होंगे? यद्यपि लोककला विश्व की प्राचीनतम कलाओं में से एक है, परंतु इस विषय का पठन-पाठन अपेक्षाकृत नया है। अत: इसके अध्ययन के उपरांत मिलने वाले रोज़गार एवं जीविका उपार्जन के अवसरों एवं अन्य संभावनाओं के बारे में जानकारी भी बहुत सीमित है।

भारत में परंपरागत रूप से लोककला और हस्तशिल्प लगभग एक-दूसरे का पर्याय ही समझे जाते हैं तथा यह व्यावसायिक जातियों के लिए सदियों से उनके जीविका उपार्जन का साधन रहें हैं। यह कला पारिवारिक रूप से एक पीढ़ी द्वारा अगली पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती रही है। व्यावसायिक जातियों के बच्चे बचपन से ही अपने पैतृक व्यवसाय में हाथ बटाते हैं और स्वत: ही इस कला में पारंगत हो जाते हैं।

उददेश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप :

- लोककला के पारंपरिक स्वरूप एवं नए परिवेश में उसके व्यवसायिक महत्व को समझ सकेंगे;
- विश्व-पटल पर भारतीय लोककलाओं को किस प्रकार महत्व मिला, यह जान सकेंगे;
- सरकारी स्तर पर लोककलाओं के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के बारे में जान सकेंगे;
- लोककला के क्षेत्र में व्यावसायिक अवसरों पर चर्चा कर सकेंगे;
- लोककला के क्षेत्र में स्वयं के लिए भूमिका की संभावना खोज सकेंगे।

देश से बड़ी मात्रा में लोककला एवं हस्तशिल्प के निर्यात होने के कारण हज़ारों लोग इस निर्यात उद्योग से जुड़े हैं। दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, भुवनेश्वर, अहमदाबाद, सूरत, जयपुर, जोधपुर, लखनऊ, मुरादाबाद, सहारनपुर, फिरोजाबाद, आगरा, श्रीनगर, हैदराबाद एवं चेन्नै जैसे शहर हस्तशिल्प निर्यात के बड़े केंद्र बन गए हैं जहाँ से करोड़ों रुपए का व्यापार होता है।

इन सब के अतिरिक्त देशभर में हज़ारों स्वयंसेवी संस्थाएँ स्थानीय स्तर पर कार्यरत हैं जो लोककला एवं कलाकारों के हित में अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाती हैं। राजस्थान, गुजरात, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, दिल्ली, पंजाब, जम्मू-कश्मीर एवं उत्तर-पूर्वी भारत में सैकड़ों स्वयंसेवी संस्थाएं हैं जिनसे लाखों की संख्या में लोक कलाकार संबद्ध हैं। इन संस्थाओं ने विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है और इनसे लाखों लोगों को रोज़गार मिल रहा है।

आज लोककला एवं हस्तशिल्प हमारे शहरी सामान्य जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। सामान्य से सामान्य घर में भी घर की सजावट एवं दैनिक उपयोग के लिए अनेक प्रकार की लोककला कृतियों का उपयोग हो रहा है। घरों की आंतरिक सज्जा एक विशेष स्थान रखने लगी है। इन्टीयर डेकोरेटर या इन्टीरिया डिज़ाइनर विशेषज्ञ की श्रेणी में शामिल हो गया है। अनेक युवा इस कार्य में लगे हैं।

समय के साथ लोककलाओं का पारंपरिक स्वरूप बदला है। बढ़ते हुए शहरीकरण एवं औद्योगीकरण ने इसमें व्यापार, व्यवस्थापन एवं सेवओं के लिए अनेक अवसरों एवं रोज़गार की नई संभावनाएँ जगाई हैं।

7.1 आंचलिक क्षेत्र में संभावनाएँ

प्रिय शिक्षार्थी, लोककला के क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न अवसरों और संभावनाओं से हमें अवगत होने की आवश्यकता है।

शीर्षक : रघुराजपुर (ओडिसा)
स्थान : ओड़ीसा
प्रकार : कलाग्राम
समय : समकालीन

संक्षिप्त परिचय

पिछले कुछ दशकों में विशेषत: सन् 1980 के बाद भारतीय लोककलाएँ तथा हस्तशिल्प विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ने में सफल रही हैं। विश्व बाज़ार में इनकी माँग और भारतीय शिल्पकारों की उत्पादन क्षमता को पहचाना गया है। भारत सरकार द्वारा विश्व के प्रमुख देशों में आयोजित किए गए 'भारत महोत्सवों' ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रूस, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी एवं जापान जैसे देशों में आयोजित इन महोत्सवों में भारतीय लोककलाओं एवं कलाकारों के अनेक कार्यक्रम एवं प्रदर्शनियाँ प्रस्तुत की गई हैं। इनमें सैकड़ों लोक कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया और विश्वविख्यात हो गए। इस सबका एक लाभ यह हुआ कि भारतीय लोककला को समूचे विश्व में सराहना मिली और उसके लिए एक नया बाज़ार तैयार हो गया। भारत के लोककलाकारों द्वारा नई लोक कलाकृतियों एवं हस्तशिल्प का निर्यात अनेक देशों को होने लगा।

विदेशी मुद्रा की आय में आशातीत वृद्धि हुई। लोककलाओं एवं हस्तशिल्प का व्यापार एवं उद्योग जीविकोपार्जन का एक नया उद्यम बनकर उभरा।

सामान्य विवरण

ओड़ीसा के पुरी शहर के निकट एक छोटे से गाँव रघुराजपुर में कई कलाकार परिवार कला का सृजन करते हैं। हर परिवार के अलग-अलग कला कक्ष हैं, जिनमें हर तरह की पारंपरिक लोककला की रचना होती है। इनमें पटचित्र, ताड़पत्र चित्र, मुखौटा, लकड़ी के खिलौने एवं कमरे को सजाने के लिये कलाकृतियों का सृजन होता है। ये कलाकार वंशानुगत कुशलता द्वारा इन कलाकृतियों की रचना करते आ रहे हैं। इनमें कुछ तकनीकी परिवर्तन हो चुके हैं, परंतु विषयवस्तु में विशेष बदलाव नहीं आया। परिवार के सभी सदस्य चाहे वे वृद्ध हों, परिवार के मुख्य सदस्य हों या किशोर किशोरी, कला रचना में अपना-अपना योगदान देते हैं।

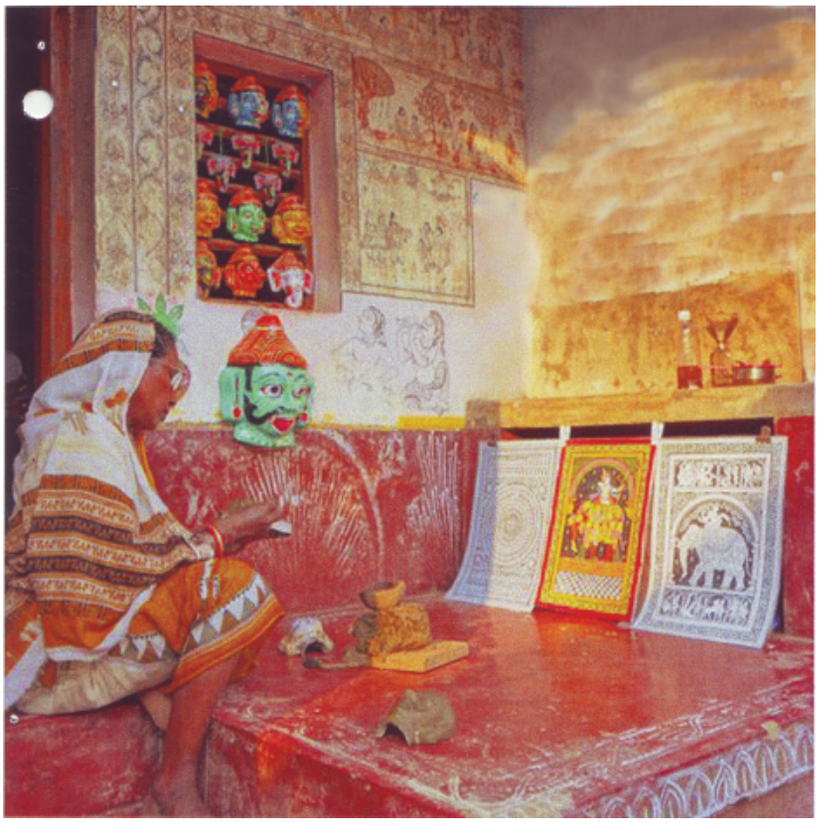

चित्र 7.1: रघुराजपुर (ओडिशा)

इस चित्र में रघुराजपुर कलाक्षेत्र का एक कलाकक्ष दिखाई देता है। परिवार की मुख्य गृहणी कला रचना कर रही है। उनके हाथ में जगन्नाथ देव का एक लकड़ी का पुतला है, जिसपर वह रंग लगा रही है। देशी एवं विदेशी पर्यटक यहाँ सदैव आते रहे हैं और इन कलाकारों की प्रशंसा करके खरीदारी भी करते हैं। विशेष रूप से इनमें छोटे-छोटे पटचित्र तथा विभिन्न प्रकार की पेपर मैशी के मुखौटों की बहुत माँग है। इस चित्र में इन सभी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है। विशेष रूप से मुखौटे का उज्ज्वल रंग, पर्यटक को बहुत ही आकर्षित करता है।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. ओड़ीशा के कलाकारों के गाँव का नाम बताइए।
2. रघुराजपुर का मुख्य उत्पाद क्या है?
3. इन कला कार्यों के मुख्य विषय क्या हैं?

7.2 काला घोड़ा उत्सव, मुम्बई

अब आप, मुम्बई के काला घोड़ा उत्सव के बारे में जानेंगे।

शीर्षक : काला घोड़ा उत्सव
स्थान : मुम्बई
प्रकार : क्राफ्ट मेला
समय : समकालीन

संक्षिप्त परिचय

विदेश में ही नहीं भारत में भी हस्तशिल्प एवं लोककलाओं के प्रति आमलोगों में जागरूकता बढ़ी और वे इस क्षेत्र को एक नई दृष्टि से देखने लगे। देश में इसकी बढ़ती माँग को देखते हुए भारत सरकार द्वारा देशभर में हस्तशिल्प प्रदर्शनियाँ एवं मेलों का आयोजन किया जाने लगा। इसी क्रम में हरियाण के फरीदाबाद के पास प्रतिवर्ष आयोजित 'सूरजकंड क्राफ्ट मेला' देश का सबसे प्रमुख क्राफ्ट मेला बन गया। यहाँ प्रतिवर्ष देश के कोने-कोने से सैकड़ों लोकशिल्पी आते हैं और लाखों लोग करोड़ों रुपये की हस्तशिल्प सामग्री खरीदते हैं।

चित्र 7.2: काला घोड़ा उत्सव, मुम्बई

सामान्य विवरण

इसकी सफलता से उत्साहित होकर अनेक क्राफ्ट मेलों का आयोजन होने लगा जिनमें मुम्बई का 'काला घोड़ा उत्सव' तथा 'नेचर बाज़ार' प्रमुख हैं जहाँ देश के हज़ारों हस्तशिल्पियों एवं लोककला उद्यमियों को रोज़गार के अपार अवसर प्राप्त होते हैं।

देश के अंदर हस्तशिल्प एवं लोककलाओं की स्थायी माँग एवं शिल्पकारों को नियमित बाज़ार उपलब्ध कराने हेतु सरकार ने देश की राजधानी दिल्ली में 'दिल्ली हाट' नाम से एक विशेष एवं स्थाई क्राफ्ट बाज़ार स्थापित किया जहाँ सालभर देश के विभिन्न प्रांतों से आए शिल्पकार लाभान्वित होते हैं। इसकी सफलता को देखते हुए सरकार ने देश के अनेक बड़े शहरों, जैसे- मुम्बई, कोलकाता, भुवनेश्वर, अहमदाबाद, भोपाल, आगरा आदि में हस्तशिल्प हाट बाज़ार स्थापित किए हैं तथा लोकशिल्पियों एवं उद्यमियों हेतु जीविकोपार्जन के अवसर जुटाए हैं।

पाठगत प्रश्न 7.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. किस देश में भारत महात्सव का आयोजन हुआ-

   (i) फ्रांस (ii) चीन

   (iii) कोरिया (iv) यूके

2. भारत में प्रमुख शिल्प मेला का नाम है-

   (i) बड़ा मेला (ii) सूरजकुंड मेला

   (iii) सामयिक मेला (iv) इनमें से कोई नहीं

7.3 कालीघाट पट्टचित्र, कोलकाता

शीर्षक : कालीघाट पट्टचित्र

स्थान : कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रकार : पटुवा पाड़ा

समय : समकालिक

संक्षिप्त परिचय

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकता के पश्चिम में विख्यात कालीबाड़ी स्थित है। धार्मिक हिंदुओं के लिये यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण तीर्थस्थान है। इस मंदिर के सन्निकट एक क्षेत्र में पटुवा या मूर्ति बनाने वाले कलाकार रहते हैं। बंगाल की संस्कृति में पूरे साल तरह-तरह के देवी-देवताओं की पूजा होती है, जिनमें दुर्गा, काली, सरस्वती आदि देवियाँ शामिल हैं। इन देवियों की पूजा दो प्रकार की होती है- 1. पारिवारिक 2. सार्वजनिक। इसी कारण इन देवियों की प्रतिमाओं की

माँग पूरे वर्ष रहती है। ये पटुवा कलाकार इन देवियों की मूर्तियाँ बनाते हैं। ये कलाकार अपनी निजी शैली की चित्रकला भी करते हैं, जिसे पट्टचित्र नाम से जाना जाता है।

चित्र 7.3: कालीघाट पट्टचित्र

सामान्य विवरण

कालीघाट के पटुवा बहुत ही सामान्य सामग्री द्वारा चित्रकला की रचना करते हैं। मूलत: कपड़ा तथा मिट्टी की बनाई हुई थाली पर ये कलाकार चित्र बनाते हैं। पारंपरिक रूप से ये वनस्पति रंगों का प्रयोग करते हैं, लेकिन आजकल बाज़ार से प्राप्त रंगों का ही प्रयोग होता है। इस चित्र में हम एक पटुवा कलाकार को चित्र बनाते देख सकते हैं। अत्यंत सामान्य परिवेश में वह एक चटाई पर बैठकर चित्र बना रहा है। सौ वर्षों से ये गिनी-चुनी विषयवस्तु पर ही पारंपरिक चित्र बनाते हैं। इनमें देवी-देवताओं की प्रतिमा मुख्य है, परंतु बीसवीं सदी के प्रारंभ में इन कलाकारों ने समकालीन सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विषयों पर आलोचना करते हुए भी चित्र बनाए हैं। आज के समय में कालीघाट चित्रकार व्यवसायिक दृष्टिकोण के चलते देवी-देवताओं के चित्र कागज़ पर भी बनाने लगे हैं। बाज़ार में इन चित्रों की बहुत माँग है।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. कोलकता में लोककला के मुख्य केंद्र का क्या नाम है?
2. काम करने वाले लोक कलाकारों को किस नाम से पुकारा जाता है?
3. पटुवा द्वारा कौन-कौन से देवी-देवताओं के मूर्ति शिल्प अथवा पट्ट चित्र बनाए जाते हैं?
4. कालीघाट के कलाकारों द्वारा प्रयोग की जाने वाली दो सामग्रियों के नाम लिखिए।

क्रियाकलाप

स्थानीय पुस्तकालय अथवा आर्ट गैलरी जाकर अनेक प्रकार के पट्टचित्र एकत्रित करके 1/2 इंपीरियल आकार की ड्राइंग शीट पर चिपकाकर इन चित्रों का सुंदर कोलाज तैयार कीजिए।

7.4 निजी क्षेत्र में संभावनाएँ

आप में से अधिकांशत: दिल्ली हाट से परिचित होंगे। आइए, अब इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करें।

शीर्षक : दिल्ली हाट
स्थान : दिल्ली
प्रकार : मेला
समय : समकालीन

संक्षिप्त परिचय

लोककला पाठ्यक्रम का एक उद्देश्य ऐसे शिक्षित वर्ग को तैयार करना भी है जो भारतीय लोककला-हस्तशिल्प के विभिन्न पहलुओं को अच्छी तरह समझता हो और जो इस क्षेत्र में स्वयं एक उद्यमी के तौर पर कुशलतापूर्वक कार्य कर सके अथवा इस क्षेत्र में कार्यरत बड़े उद्यमियों को अपनी विशेषज्ञ सेवाएँ देकर न केवल उनके कार्य में सहयोग कर सके, बल्कि स्वयं के लिए भी रोज़गार के अवसर जुटा सके।

आज विश्व की अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत से लोककला एवं हस्तशिल्प का आयात करती है। इन कंपनियों ने अपने कार्यालय भारत में स्थापित किए हैं। वे शिल्पियों एवं स्थानीय उद्यमियों से सीधे संपर्क स्थापित कर उन्हें अपनी माँग के अनुरूप वस्तुओं के उत्पादन का आर्डर देती हैं तथा तैयार उत्पाद खरीदती हैं। अनेक आयातक कंपनियों के अधिकारी भारत के हस्तशिल्प उत्पादक केंद्रों का दौरा करते हैं। भारत के अनेक शहरों में ऐसी स्थानीय एजेंसियाँ बन गई हैं जो इन विदेशी आयातक कंपनियों की उनके इस कार्य में सहायता करती हैं। वे विदेशी आयातकों एवं देशी शिल्पकारों एवं हस्तशिल्प निर्माताओं के बीच संपर्कसूत्र का कार्य करती हैं। यहाँ लोककला के जानकार कर्मचारियों के लिए अच्छी संभावनाएँ बनी रहती हैं।

सामान्य विवरण

'दिल्ली हाट' देश की राजधानी दिल्ली में लोककला एवं शिल्प को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है। हाट का अर्थ है बाज़ार। देश के कोने-कोने से, सभी राज्यों से कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करने हेतु इस बाज़ार में आते हैं। इनमें कुछ की स्थाई दूकाने होती हैं, कुछ की अस्थायी जिससे बदल-बदल कर दूसरे राज्यों की कलाकृतियाँ लेकर कलाकार आते रहते हैं। हरेक 15 दिनों में दिल्ली हाट में प्रदर्शनी बदलती रहती है। इनके नाम भी बदलते रहते हैं। कभी शिल्प मेला, कभी ट्राईबल मेला आदि। दिल्ली हाट को दरअसल 1994 में दिल्ली टूरिज्म एंड ट्रांसपोरटेशन डेवलपमेंट कारपोरेशन (डिटीटीडीसी) द्वारा स्थापित किया गया था।

चित्र 7.4: दिल्ली हाट

दिल्ली हाट में प्रवेश करने पर ऐसा लगता है जैसे भारत के किसी गाँव में आ गए हैं। शहर के बीच भारत के छोटे राज्यों में गाँवों की कलाकृतियों की नुमाइश बरबस लोगों को लुभाने के लिये सक्षम है। इस हाट की मुख्य विशेषता यह है कि गाँवों के बाज़ार को एक मार्डन रूप में विकसित किया गया है जिसके कारण गाँव के रहन-सहन का अंदाजा शहर में रहने वाले लोग या विदेशी कला प्रेमी भी लगा सकते हैं। इसी कारण देशी तथा विदेशी भी यहाँ एक बार ज़रूर आते है। विभिन्न तरह की कलाकृतियाँ, वस्तुएँ यहाँ तक कि विभिन्न राज्यों की खाने-पीने की चीज़ें आपकों यहाँ मिल सकती है, जिस कारण भारत के विभिन्न प्रदेशों के रहन-सहन, खान-पान और कला का अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है। यहाँ कई कलाकार अपनी दुकानों में कलाकृति बनाते हुए आपको दिख सकते हैं। वस्त्र बनाते हुए, पेटिंग करते हुए इन कलाकारों से हम मिल सकते हैं। उनके प्रदेश की कला के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। यहाँ सूती-रेशमी कपड़े, ऊनी कपड़े एम्ब्राइडरी, गहने, घर की सजावट की वस्तुएँ आसानी से मिल सकती हैं। साथ ही यहाँ लोककला से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य आदि भी हाट की सुंदरता को बढ़ा देते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.4

1. लोककला के विद्यार्थी के लिए निजी क्षेत्र में रोज़गार की क्या संभावनाएँ है?
2. भारतीय हस्तशिल्प की विदेशी आयतक कंपनियों में लोककला के शिक्षार्थियों हेतु क्या अवसर हैं?
3. भारत के कौन-से शहर हस्तशिल्प निर्यात के बड़े केंद्र बन गए हैं?
4. दिल्ली हाट लोककला मेले का प्रारंभ कब हुआ?

क्रियाकलाप

अपने आसपास आयोजित होने वाले किसी शिल्प मेले में जाइए। अब मेले के साथ अपना अनुभव लिखिए और मेले में आपको जो कुछ भी रोचक लगे, उसका वर्णन कीजिए।

7.5 सरकारी क्षेत्र में संभावनाएँ

शिक्षार्थी! अब आप सरकारी क्षेत्र में विभिन्न अवसरों का विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

शीर्षक : सूरजकुंड लोककला मेला

स्थान : हरियाणा

उत्सव : वार्षिक मेला

समय : समकालीन

संक्षिप्त परिचय

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों के अनेक कार्यालय देशभर में फैले लोक कलाकारों एवं हस्तशिल्पियों के हितों की रक्षा के लिए एवं उन्हें विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु कार्यरत हैं। इनमें हज़ारों कर्मचारी भी कार्यरत हैं। भारत सरकार के हस्तशिल्प विकास निगम के कार्यालय समूचे देश में फैले हुए हैं जो देश भर में लोककला की मार्केटिंग का आयोजन करते हैं। वे नए डिज़ाइन एवं तकनीक संबंधी ट्रेनिंग देते हैं एवं देश-विदेश में इस संबंध में जागरूकता फैलाने

हेतु अनेक कार्यक्रम करते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक राज्य में उस राज्य सरकार द्वारा संचालित राज्य हस्तशिल्प निदेशालय होता है जिसमें कर्मचारी राज्य के हस्तशिल्पियों के हित में कार्य करते हैं। वे देश में बड़े-बड़े शहरों में स्थापित अपने शोरूम एवं एम्पोरियमों के माध्यम से उस राज्य की विशेष लोककलाओं का प्रचार-प्रसार करते हैं।

सामान्य विवरण

'सूरजकुंड क्राफ्ट मेला' देश का सबसे प्रमुख क्राफ्ट मेला है। यहाँ प्रतिवर्ष देश के कोने-कोने से सैकड़ों लोकशिल्पी आते हैं और लाखों लोग हस्तशिल्प की सामग्री खरीदते हैं। दरअसल सूरजकुंड शिल्पकला का बहुत बड़ा बाज़ार है। सूरजकुंड क्राफ्ट मेला एक वार्षिक उत्सव मेला है जो हरियाणा राज्य के फरीदाबाद में स्थित है। यहाँ पर भारत की कला का प्रदर्शन होता है। यहाँ के कलाकारों की कला का प्रदर्शन सार्क देशों में भी उपलब्ध कराया जाता है।

चित्र 7.5: सूरजकुंड क्राफ्ट मेला

सामान्य विवरण

सूरजकुंड मेला सर्वप्रथम 1987 में फरीदाबाद में आयोजित किया गया था। यहाँ भारत के विभिन्न राज्यों के चित्रकार, मूर्तिकार, बुनकर, कलाकार अपनी लोककला का प्रदर्शन करते हैं। अलग-अलग राज्यों के स्टाल उनकी कलाकृतियों से सजे होते हैं, साथ ही उनके कलाकार भी अपनी कलाकृति बनाते हुए अपनी कला की जानकारी देते हैं। 17 दिन के इस मेले में कलाओं का संगम होता है। सबसे बेहतरीन स्टाल को पुरस्कृत किया जाता है। इसके अलावा विभिन्न कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। सूरजकुंड मेला वह मंच है जहाँ भारत की विभिन्नता और समृद्धि सहित हमारे लोककला कुशल हस्तकरघा उद्योग उपस्थित होते हैं। सभी प्रकार के कुशल-अकुशल उद्यमी कलाकारकर्मी अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। उन्हें अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए सार्क देशों में जाने का मौका भी मिलता है।

पाठगत प्रश्न 7.5

1. सूरजकुंड का मेला किस राज्य के किस शहर में लगता है?
2. सूरजकुंड मेला साल में कितनी बार लगता है?
3. किस वर्ष सर्वप्रथम सूरजकुंड मेला लगना प्रारम्भ हुआ था?

कार्यकलाप

किसी स्थानीय क्राफ्ट मेले में जाइए और अपना अनुभव लिखिए। मेले के किसी रोचक पहलू का भी वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

आपने क्या सीखा

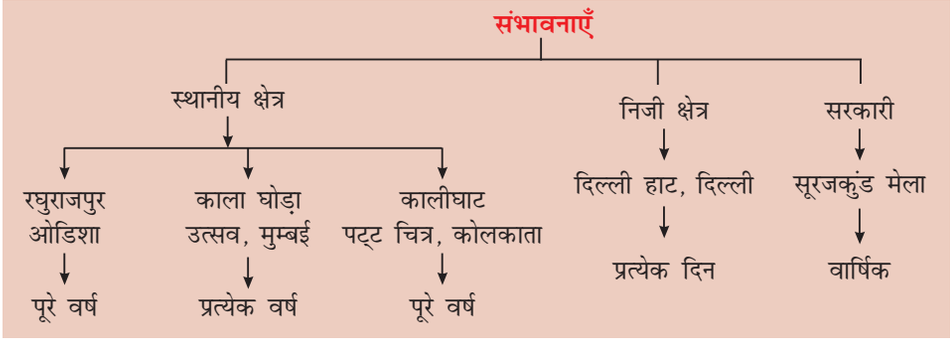

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थियो

- अपनी निर्मित कृतियों को प्रदर्शित कर सकते हैं।
- लोक तथा आदिवासी शैलियों के सम्मिश्रण से नया कला बना सकते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. विश्व बाज़ार में भारतीय लोककला की पहचान कैसे बनी?
2. भारत के कुछ महत्वपूर्ण क्राफ्ट मेलों के नाम लिखिए।
3. भारत में हस्तशिल्प के व्यापार के लिए 'हाट बाज़ार' किन शहरों में स्थापित किए गए हैं?
4. भारत में हस्तशिल्प के निर्यात के बड़े केंद्र कौन-से हैं?
5. भारत सरकार एवं राज्य सरकार के कौन-से कार्यालय लोककलाकारों के हित में कार्यक्रम चलाते हैं?
6. लोककला विषय के विद्यार्थियों हेतु रोज़गार की क्या संभावनाएं हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. उड़ीसा में एक छोटे से गाँव रघुराजपुर में है।
2. तालपट्ट चित्रण, मुखौटे, लकड़ी के खिलौने एवं कमरे को सजाने हेतु विभिन्न कलाकृतियों का सृजन किया जाता है।
3. मुख्य विषय जगन्नाथ देव की तथा बलराम की लकड़ी की मूर्तियों का सृजन तथा पेंटिंग कार्य बहुतायात में किया जाता है।

7.2

1. (i) फ्रांस
2. (ii) सुरजकुंड

7.3

1. कलकत्ता में पश्चिमी भाग में कालीबाड़ी नामक एक प्रसिद्ध स्थान है, जो लोककला का मुख्य केंद्र है।
2. काम करने वाले कलाकारों को पटुवा नाम से पुकारा जाता है।
3. मुख्य रूप से दुर्गा, काली एवं सरस्वती देवी इत्यादि की मूर्तियाँ एवं पट्ट चित्रों का सृजन करते हैं।

7.4

1. निजी क्षेत्र में बड़े देशी-विदेशी उद्यमियों को अपनी विशेषज्ञ सेवाएँ दे सकते हैं।
2. विदेशी आयातक एवं स्थानीय शिल्पियों एवं उद्यमियों के मध्य संपर्क सूत्र का कार्य कर सकते हैं।
3. दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, भुवनेश्वर, अहमदाबाद, सूरत, जयपुर, जोधपुर, लखनऊ, मुरादाबाद, सहारनपुर, फिरोजाबाद, आगरा, श्रीनगर, हैदराबाद एवं चेन्नै।
4. दिल्ली हाट मेला परिसर का प्रारम्भ 1994 में हुआ था।

7.5

1. सूरजकुंड मेला फरीदाबाद शहर में तथा हरियाणा राज्य में लगता है।
2. एक बार
3. 1987

शब्दकोष

लोककला	:	जन सामान्य द्वारा बनाई गई कला
हस्तशिल्प	:	हाथों से बनया गया शिल्प
आयात	:	दूसरे देश से क्रय कर समाना मँगाना
निर्यात	:	दूसरे देश को सामान भेजना
जीवकोपार्जन	:	अपनी आजीविका कमाना
उपरांत	:	बाद में
उत्पादक	:	उत्पादन करने वाले
आंतरिक सज्जा	:	घर के अंदर की सजावट